Veer Bal Diwas translations

Assamese (Used font: Nirmala UI)

বীৰ বাল দিৱসৰ উপলক্ষে
মই ------------------------ গুৰু গোবিন্দ সিঙৰ সৰু পুত্ৰসকলক প্ৰণাম জনাইছোঁ যিয়ে অভাৱনীয় বলিদানেৰে এনেকুৱা এক দৃষ্টান্ত দাঙি ধৰিছিল যে জগতৰ ইতিহাসত আজিলৈকে যাৰ দ্বিতীয় এটা উদাহৰণ পোৱা নাযায়৷

১৭০৪ চনৰ আজিৰ দিনটোতেই মাথোঁ ৭ আৰু ৯ বছৰ বয়সৰ সৰু ল'ৰা জোৰাবৰ সিং আৰু বাবা ফটেহ সিঙে অত্যাচাৰী মোগল নৱাব বজীৰ খানৰ নৃশংসতাৰ বিৰোধ কৰিছিল৷ শিখ ধৰ্ম অথবা শিখ পন্থাৰ গৰিমা আৰু সন্মান ৰক্ষাৰ নিমিত্তেই দেৱালত জীৱন্তে নিজকে পোত যাবলৈ দি মৃত্যুক আকোঁৱালি লৈছিল, তথাপিও শিখ ধৰ্ম পৰিত্যাগ কৰা নাছিল৷

ধৰ্মৰ স্বাধীনতাৰ বাবে যুঁজি জীৱন বলিদানৰে বৰ্বৰ মোগল সাম্ৰাজ্যৰ ভেটি কঁপাই দিব পৰা এনে বালকৰ মহান বীৰত্বক প্ৰণাম কৰি মাননীয় প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীয়ে ২৬ ডিচেম্বৰৰ দিনটোক "বীৰ বাল দিৱস" হিচাপে ঘোষণা কৰিছে৷

মাতৃ গুজৰী আৰু পুত্ৰৰ মহান আৰু অসাধাৰণ বলিদানক ৰাষ্ট্ৰই সদায় সশ্ৰদ্ধ প্ৰণাম কৰি যাব৷

Bengali (Used font: Vrinda)

বীর বাল দিবস উপলক্ষ্যে
আমি, ... , গুরু গোবিন্দ সিংহের ছোট সাহেবজাদাদের প্রণাম জানাই, যারা নিজেদের অনন্য আত্মবলিদানের মাধ্যমে এক অদ্বিতীয় নিদর্শন সৃষ্টি করেছেন। পৃথিবীর ইতিহাসে এ নজিরের জুড়ি মেলা ভার।

ছোট সাহেবজাদা বাবা জোরাবর সিংহ এবং বাবা ফতে সিংহ, অত্যাচারী মুঘল নবাব ওয়াজির খানের জোরজুলুমের বিরোধিতা করায় ১৭০৪ সালের আজকের দিনে জীবন্ত অবস্থাতেই তাদের প্রাচীরের মধ্যে গেঁথে হত্যা করা হয়। ছোট সাহেবজাদা বাবা জোরাবর সিংহ এবং বাবা ফতে সিংহের বয়স তখন যথাক্রমে ৭ এবং ৯ বৎসর।নিজেদের শিখধর্মকে না ছেড়ে, শিখ

ধর্মের গৌরব এবং সম্মানের স্বার্থে, তারা এই আত্মবলিদানের পথ বেছে নেন।

নিজ ধর্মের স্বাধীনতা রক্ষার্থে, সাহেবজাদা বালকদ্বয়ের এই আত্মবলিদানের পরিনামস্বরূপ, অত্যাচারী মুঘল সাম্রাজ্যের ভিত নড়ে গিয়েছিল। তাদের এই মহান আত্মবলিদানকে শ্রদ্ধা জানিয়ে মাননীয় প্রধানমন্ত্রী শ্রী নরেন্দ্র মোদি ২৬ ডিসেম্বরকে বীর বাল দিবস হিসেবে ঘোষণা করেছেন।

মাতা গুজরি এবং সাহেবজাদাদের এই অসাধারণ আত্মবলিদানকে দেশ চিরকাল মনে রাখবে।

Bodo (Used font: Mangal)

बिर-जोहोलाव खुदिया साननि बे खाबुआवनो
आं.................................. गुरु गोबिन्द सिंहनि उन्दै उन्दै फिसाफोरखौ खुलुमहरबाय। बिथांमोनहा गावसोरनि नाजानायजों मोनसे गोमोथाव मोनफुंनो हादों, जायखौ बे मुलुगनि जारिमिनाव दिनैसिम नैथि बिदिन्थि मोननो हाया।

दिनैनि सानावनो 1704 आव 7 आरो 9 बोसोर बैसोनि उन्दै उन्दै गथ' जोराबर सिंह आरो बाबा फातेह सिंहआ उदखारि मुगल नबाब वजीर खाननि उदखार हाबानि बेरेखायै गसंथानानै सिख धोरोमनि फोथायनाय आरो सन्माननि थाखाय गावसोरखौ गोथाङै इन्जुराव दोथाबहोजादोंमोन थेवबो सिख धोरोमखौ नागाराखैमोन।

धोरोमनि उदांस्रिनि थाखाय गावसोरनि जिउखौ नागारनानैब्लाबो उदखारि मुगल खुंथायनि रोदाखौ सोमावग्लुंनो हानाय बै गेदेमा मुंख्लं गथ'साफोरनि फारसे खुलुमनाय बाउहरनानै मानगोनां गाहाइ मनग्रि नरेन्द्र मोदिया 26 दिसेम्बरखौ गथ'सा सान महरै फोसावदों।

बिमा गुजरी आरो बिथांनि फिसाफोरनि गोमोथाव बाउनायखौ हादोदआ जेब्लाबो गोसोखांबाय थागोन।

Dogri

वीर बाल दिवस दे मौके उप्पर

में..... गुरु गोबिन्द सिंह दे निक्कें साहिबजादे गी मत्था टेकना। जि'नें अपनी बेशकीमती शहादत राहें इक अनोखी मसाल कायम कीती। जेह्दे मकाबले च पूरी दुनिया दे इतेहास च कोई होर।

दुआ उदाहरण नेईं मिलदा। अज्जै दे दिन सन 1704 ई. च 7 ते 9 साल दे निक्कें साहिबजादें बाबा जोरावर सिंह ते बाबा फतेह् सिंह नै जालम मुगल नवाब वजीर खान दे जुलमें खलाफ बरोध करदे होई सिक्ख पंथ दी गौह् ते इज्जत दी खात्तर अपने आप गी जिंदा कन्धै च चनौना मंजूर कीता पर सिक्ख धर्म नेईं छोड़ेआ।

धर्म दी अजादी आस्तै अपनी कुर्बानी देइयै जालम मुगल राज दियां जड़ां ल्हाने आह्ले साहिबजादें दी म्हान शहादत गी प्रणाम करदे होई मानजोग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी होरें 26 दिसम्बर गी वीर बाल दिवस दे रूपै च मनाने दा एलान कीता ऐ।

माता गुजरी ते साहबजादे दी बेमिसाल शहादत गी राष्ट्र म्हेशा चेत्ता रक्खग।

Gujarati

વીર બાળ દિવસના અવસરે
****

હું ... ... ગુરુ ગોવંદસિંહના બાળ રાજકુમારોને વંદન કરું છું, જેમણે પોતાની અભૂતપૂર્વ શહાદત દ્વારા વિશ્વના ઇતિહાસમાં આજ સુધી ક્યાંય જોવા ન મળ્યું હોય એવું અનોખું અમર દૃષ્ટાંત આપ્યું છે.

આજના દિવસે ઈ.સ.૧૭૦૪ માં સાત અને નવ વર્ષના બાળ રાજકુમારો બાબા જોરાવરસિંહ અને બાબા ફતેસિંહે જાલીમ મોગલ નવાબ વજીરખાનના જુલમનો વિરોધ કરીને શીખ પંથની ગરિમા અને સન્માનને ખાતર પોતાને દીવાલમાં જીવતાં ચણાવી લીધાં; પરંતુ શીખધર્મ છોડ્યો નહીં.

ધર્મની સ્વતંત્રતા માટે પોતાની શહાદતથી જાલીમ મોગલ સામ્રાજ્યના પાયા હચમચાવી દેનાર આ રાજકુમારોની શહાદતને પ્રણામ કરતાં માનનીય પ્રધાનમંત્રી શ્રી નરેન્દ્ર મોદીજીએ ૨૬ ડિસેમ્બરને વીર બાળ દિવસ ઘોષિત કર્યો છે.

માતા ગુજરીજી અને રાજકુમારોની આ અભૂતપૂર્વ શહાદતને રાષ્ટ્ર સદાય યાદ કરતું રહેશે.

Hindi

वीर बाल दिवस के मौके पर मैं..... गुरु गोबिन्द सिंह के छोटे साहिबज़ादों को नमन करता हूँ। जिन्होंने अपनी अनूठी शहादत द्वारा एक ऐसी अनोखी मिसाल कायम की, जिसकी संसार के इतिहास में आज तक कोई दूसरी उदाहरण नहीं मिलती।

आज ही के दिन सन 1704 ईसवी में 7 और 9 साल के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह ने ज़ालिम मुग़ल नवाब वजीर खान के जुल्म का विरोध करते हुए सिख पंथ की गरिमा और सम्मान की खातिर अपने आप को जिंदा दीवार में चुनवा लिया पर सिक्ख धर्म नहीं छोड़ा।

धर्म की आजादी के लिए अपनी शहादत देकर ज़ालिम मुग़ल साम्राज्य की जड़ें हिला देने वाले साहिबजादों की महान शहीदी को प्रणाम करते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 26 दिसबंर को वीर बाल दिवस घोषित किया है।

माता गुजरी जी और साहिबजादों की अनूठी शहादत को राष्ट्र सदा स्मरण करता रहेगा।

Kannada

ವೀರ ಬಾಲಕರ ದಿವಸದ ದಿನಾಚರಣೆಯ ದಿನ ನಾನು ..... ಗುರು ಗೋವಿಂದ ಸಿಂಗ್ ರವರ ಪುಟ್ಟ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ನಮನವನ್ನ ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತಿದ್ದೇನೆ . ಇವರು ತಮ್ಮ ಅನನ್ಯ ಹುತಾತ್ಮತೆಯಿಂದ
ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಉದಾಹರಣೆಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಬದ್ದಾರೆ.

ಇಂತಹ ಉದಾಹರಣೆ ಇದುವರೆಗೂ ಇಡೀ ವಿಶ್ವದ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲೂ ಕಂಡು ಬಂದಿಲ್ಲ. ಇವತ್ತಿನ ದಿನ ಕ್ರಿ.ಶ. 1704 ರಲ್ಲಿ, 7 ಮತ್ತು 9 ವರ್ಷದ ಬಾಲಕರಾದ ಬಾಬಾ ಜೋರಾವರ್ ಸಿಂಗ್ ಮತ್ತು ಬಾಬಾ ಫತೇ ಸಿಂಗ್ ಅವರು ಸಿಖ್ ಧರ್ಮದ ಘನತೆ ಮತ್ತು ಗೌರವಕ್ಕಾಗಿ ಮೊಘಲ್ ನ ನವಾಬ್ ವಜೀರ್ ಖಾನ್ ನ ದಬ್ಬಾಳಿಕೆಯ ವಿರುದ್ಧ ಪ್ರತಿಭಟಿಸಿದರು. ಕೊನೆಗೂ ಸಿಖ್ ಧರ್ಮವನ್ನು ಬಿಡದೆ ಗೋಡೆಯಲ್ಲಿ ಜೀವಂತ ಸಮಾಧಿಯಾಗುವುದನ್ನು ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡರು.

ಧರ್ಮದ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ತಮ್ಮ ಹುತಾತ್ಮತೆಯನ್ನು ನೀಡುವ ಮೂಲಕ ನಿರಂಕುಶ ಮೊಘಲ್ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ಬೇರುಗಳನ್ನು ನಡುಗಿಸಿರುವ ಈ ಬಾಲಕರ ಮಹಾನ್ ಹುತಾತ್ಮತೆಗೆ ವಂದನೆ ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತಾ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಯವರು ಡಿಸೆಂಬರ್ 26 ರಂದು ವೀರ ಬಾಲಕರ ದಿನ ಎಂದು ಘೋಷಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ತಾಯಿ ಗುಜರಿಯವರ ಮತ್ತು ಅವರ ಮಕ್ಕಳ ಮರೆಯಲಾಗದ ಹುತಾತ್ಮತೆಯನ್ನು ರಾಷ್ಟ್ರವು ಸದಾಕಾಲ ಸ್ಮರಿಸುತ್ತದೆ.

Konkani

वीर बालदिसाच्या निमतान हांव, ... गुरू गोविंद सिंह हांच्या सान साहिबजाद्यांक नमन करतां, जांणी आपल्या अनन्य बलिदानान एक अशी देख घालून दिल्या, जिका संवसारांत तोड ना.

आयच्याच दिसा, 1704 वर्सा, 7 आनी 9 पिरायेचे सान साहिबजादे, बाबा जोरावर सिंह आनी बाबा फतेह सिंह हांणी अत्याचारी मुगल नवाब वजीर खानाच्या जुलमांचो निशेध करतना, शीख पंथाची प्रतिश्ठा आनी आनी भोवमान राखपा खातीर आपणांक वणटींत चिणून घेतलें, पूण शीख धर्म सोडलो ना.

धर्माच्या स्वातंत्र्या खातीर आपलें बलिदान दिवन जुलमी मुगल साम्राज्य मुळांतल्यान हालोवपी साहिबजाद्यांच्या म्हान हौतात्म्याक नमन करून भोवमानेस्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हांणी 26 डिसेंबर हो दीस 'वीर बाल दीस' म्हूण घोशीत केला.

माता गुजरीबाय आनी साहिबजाद्यांचें हें अतुलनीय बलिदान राष्ट्राचे यादींत अज्रंवर उरतलें.

Maithili

बीर बाल दिवसक अवसर पर
हम ..... गुरु गोविन्द सिंहक दुनू राजकुमारकेँ नमन करैत छी जे अपन अद्भुत बलिदानक माध्यमे एहेन उदाहरण स्थापित केलनि जकर कोनो दोसर उदाहरण संसारमे एखनहुँ धरि नहि भेटैत अछि *।

1704 इसवीमे अझुके दिन सात आ नौ वर्षक राजकुमार बाबा जोरावर सिंह आ बाबा फ़तेह सिंह निर्मम मुगल नबाब वजीर खानक अत्याचारक विरोध करैत अपनाकेँ देबालमे चुनबा लेलन्हि मुदा सिक्ख धर्म नहिं छोड़लनि।

धर्मक आजादी लेल अपन बलिदानसँ जालिम मुगल साम्राज्यक जड़ि डोला देनिहार दुनू राजकुमारकेँ नमन करैत माननीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी 26 दिसम्बरकेँ बीर बाल दिवस घोषित केलन्हि अछि।

माँ गुजरी जी आ दुनू राजकुमारक अद्भुत बलिदानकेँ राष्ट्र सतत स्मरण करैत रहत।

Malayalam

വീര ബാലദിവസം ആചരിക്കുന്ന ഈ അവസരത്തിൽ ഞാൻ...................

ഗുരു ഗോബിന്ദ് സിംഹിന്റെ അരുമക്കിടാങ്ങളെ നമിക്കുന്നു. ലോകചരിത്രത്തിൽ മറ്റൊരു ഉദാഹരണം ഇല്ലാത്തവിധത്തിൽ വിശിഷ്ടമായ ബലിദാനമാണ് ആ വീരബാലകരുടേത്.

ക്രിസ്ത്വബ്ദം 1704 ലെ ഇതേ ദിവസമാണ് ഏഴും ഒമ്പതും വയസ്സുള്ള ബാബ ജോറാവർ സിംഹും ബാബാ ഫത്തേഹ് സിംഹും ദുഷ്ടനായ മുഗൾ നവാബ് വസീർഖാന്റെ അതിക്രമങ്ങളെ ചെറുത്തു നിന്ന് സിക്ക് ധർമ്മത്തിന്റെ അഭിമാനം കാത്തത് . ആ അരുമക്കിടാങ്ങളെ ജീവനോടെ ഭിത്തിയിൽ വച്ച് കല്ല് കെട്ടിയിട്ടും അവസാനശ്വാസം വരെയും അവർ സിക്കുധർമ്മം ഉപേക്ഷിച്ചില്ല .

മതസ്വാതന്ത്ര്യത്തിനു വേണ്ടി സ്വജീവൻ ബലിയർപ്പിച്ച് മുഗൾ സാമ്രാജ്യത്തിന്റെ അടിവേരുകൾ ഇളക്കിയ ആ വീരബാലകാരുടെ മഹാബലിദാനത്തെ നമിച്ചുകൊണ്ട് പ്രധാമന്ത്രി നരേന്ദ്രമോദിജി ഡിസംബർ 26 വീരബാലദിനമായി പ്രഖ്യാപിച്ചിട്ടുണ്ട്.

മാതാ ഗുജാരീജിയുടെയും വീരസന്താനങ്ങളുടെയും ബലിദാനത്തെ രാഷ്ട്രം സദാ സ്മരിക്കും.

Manipuri (Used font: Vrinda)

থৌনা ফবা অঙাংশিংগী নুমৎসিদা

ঐ . . ..না গুরুগোবিন্দ সিংহগী মচাশিংবু ঐনা খুরুমজরি মখোয়গী অঙকপা ফংলবা কৎথোকপনা তাইবংগী পুৱারীদা অমুক্তা লখৈদ্রিবিবা খুদম অমা থম্লম্লে।

ঙসিগী নুমৎসমিক্তদা কুমজা ১৭০৪দা চহি ৭ অমসুং ৯দা ঙায়রবিবা বাবা জোরৱর সিংহ অমসুং বাবা ফতহে সিংহনা ফৎত্রবা মোগল নবাবাৱজরি খানগী মীওৎ মীনগৌ মায়োক্তা লপ্তেুনা শখি লাইনিংগী মিংচৎ অমসুং ঈকাইখুম্নবা ঙাক্নবগীদমক মশাবু হংনা হংনা চকেপলনুংদা চনশনিহনখি অদুবু মখোয়গী লাইনীংবুদি থাদোকখিদে।

ধরম্মবু মনীংতম্না লহৈন্নবগীদমক্তা মপুনসি কৎথোক্তুনা মোগল সম্রাজ্যগী চৎলবা যূম্ফমবু নীকহনখবিা অঙাং অনীগী ঈকাইখুম্নবা উৎলদুনা

ঈকাখুম্নজরবিা প্রধান মন্ত্রী নরন্দ্র মোদনিা ডসিম্েবর ২৬পু থৌনা ফবা অঙাংগী নুমৎি হায়না লাউথোকপর্থিা৷
ইমা ইবমে্মা সুরজ্গ অমসুং মচাশংিগী কৎথোকপা অসবিু লবৌাক অসনিা মতম চূপ্পদা নীংশংিলা৷

Marathi

वीर बालदिनाच्या निमित्त मी .... गुरू गोविंद सिंग यांच्या लहान सुपुत्रांना अभिवादन करतो. त्यांनी आपल्या अद्वितीय हौतात्म्याने एक आदर्श निर्माण केला. जगाच्या इतिहासात या हौतात्म्यासमान दुसरे उदाहरण सापडणे महाकठीण आहे.

१७०४ सालातील आजच्याच दिवशी ७ वर्षीय बाबा जोरावर सिंग आणि ९ वर्षीय बाबा फतेह सिंग यांनी जुलमी मुघल नवाब वजीर खानच्या अत्याचाराविरुद्ध दंड थोपटले. शीख पंथाची प्रतिष्ठा, आत्मसन्मान यासाठी स्वत:ला भिंतींमध्ये जीवंतपणीच चिणवून घेतले. मात्र शीख धर्म त्यागण्यास नकार दिला.

धर्म पालनाच्या स्वातंत्र्यासाठी त्यांनी हौतात्म्य पत्करले. मुघल साम्राज्याला हा मोठा हादरा होता. या दोन वीर बालकांच्या हौतात्म्याच्या स्मृती जागृत ठेवण्यासाठी माननीय पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी २६ डिसेंबर हा दिवस वीर बालदिन म्हणून घोषित केला आहे.

माता गुजरी आणि दोन सुपुत्रांच्या या अद्वितीय साहसाला राष्ट्र कायम स्मरणात ठेवेल.

Odia (Used font: Nirmala UI)

ବୀର ବାଲ ଦିବସ ଅବସରରେ,
ମୁଁ .... ଗୁରୁ ଗୋବିନ୍ଦ ସିଂହଙ୍କ ପୁତ୍ର ମାନଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ କରୁଛି, ଯେଉଁମାନେ ନିଜର ବଳିଦାନରେ ଏପରି ଏକ ଅନନ୍ୟ ଉଦାହରଣ ସୃଷ୍ଟି କରିଥିଲେ, ବିଶ୍ୱ ଇତିହାସରେ ଯାହାର ଆଜି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅନ୍ୟ କୌଣସି ଉଦାହରଣ ନାହିଁ।

୧୭୦୪ ଖ୍ରୀଷ୍ଟାବ୍ଦ ଆଜି ଦିନରେ ୭ ବର୍ଷର ବାବା ଜୋରାୱର ସିଂହ ଏବଂ ୯ ବର୍ଷ ବୟସ୍କ ବାବା ଫତେ ସିଂହ ମୋଗଲ ନବାବ ୱଜୀର ଖାନଙ୍କ ଅନ୍ୟାୟର ବିରୋଧ କରିବା ପୂର୍ବକ ଶିଖ ଧର୍ମର

ଗରିମା ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପାଇଁ ଚାରି କାନ୍ଥ ଭିତରେ ନିଜକୁ ଉତ୍ସର୍ଗ କରିଦେଇଥିଲେ, କିନ୍ତୁ ମୃତ୍ୟୁ ଭୟରେ ସେମାନେ ଶିଖ ଧର୍ମ ପରିତ୍ୟାଗ କରି ନ ଥିଲେ।

ଧର୍ମର ସ୍ୱାଧୀନତା ପାଇଁ ଶହୀଦ ହୋଇ ମୋଗଲ ସାମ୍ରାଜ୍ୟର ମୂଳ ଦୋହଲାଇ ଦେଇଥିବା ପୁତ୍ରଙ୍କ ଭଳି ମହାନ ଶହୀଦଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ କରିବା ପୂର୍ବକ ମାନ୍ୟବର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦୀ ୨୬ ଡିସେମ୍ବରକୁ ବୀର ବାଲ ଦିବସ ଭାବେ ଘୋଷଣା କରିଛନ୍ତି।

ମାତା ଗୁଜରୀ ଜୀ ଏବଂ ପୁତ୍ରମାନଙ୍କ ଅନନ୍ୟ ବଳିଦାନକୁ ରାଷ୍ଟ୍ର ସଦା ସ୍ମରଣ କରିବ।

Sanskrit

वीरबालदिवसस्य अवसरे अहं ....गुरुगोविन्दसिंहस्य लघुवीरपुत्रौ नमस्करोमि, यौ निजेन अद्वितीयेन बलिदानेन एकम् एतादृशम् आश्चर्यमयम् आदर्शं स्थापितवन्तौ। यस्य विश्वेतिहासे न किमपि उदाहरणं प्राप्यते।

अद्यतनदिवसे एव चतुरधिकसप्तदशे ख्रिष्टाब्दे (१७०४) सप्तवर्षीयः लघुपुत्रः जोरावरसिंहः नववर्षदेशीयः फतेहसिंहः क्रूरमुगलशासकस्य वजीरखानस्य क्रूरतायाः विरोधं कुर्वन्तौ सिक्खपंथस्य गरिमवृद्ध्यै सम्मानाय च आत्मानौ जीवन्तौ भित्त्यां योजितवन्तौ परन्तु सिक्खधर्मं न त्यक्तवन्तौ।

धर्मस्य स्वतन्त्रतार्थं स्वबलिदानेन क्रूरमुगलसाम्राज्यस्य मूलकम्पकानां वीराणां महद् बलिदानं प्रणमन् माननीयः प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी (२६) दिसम्बरस्य षड्विंशतिदिनांकं बालदिवसं घोषितवान् अस्ति।

मातुः गुजर्याः तथा वीरबालकयोः अद्वितीयं बलिदानं राष्ट्रं सदैव स्मरिष्यति।

Santali (Used font: Nirmala UI)

ᱵᱤᱻᱨ ᱜᱤᱫᱟᱹᱨ ᱢᱟᱦᱟᱸ ᱨᱮᱭᱟᱜ ᱟᱹᱦᱤᱵᱟᱹᱦᱤ ᱨᱮ

ᱤᱧ .... ᱜᱩᱨᱩ ᱜᱚᱵᱤᱱᱫ ᱥᱤᱝ ᱨᱤᱱ ᱦᱩᱰᱤᱧ ᱵᱤᱨᱟᱹᱫᱤᱭᱟᱹ. ᱠᱤᱱᱤᱧ ᱜᱚᱰ ᱟᱹᱠᱤᱱ ᱠᱟᱱᱟ । ᱡᱟᱦᱟᱸᱭ ᱟᱹᱠᱤᱱᱟᱜ ᱡᱤᱣᱤ ᱟᱞᱟᱭ ᱠᱟᱛᱮ ᱢᱟᱫᱪᱟᱝ ᱱᱚᱝᱠᱟᱱ ᱵᱟᱝ ᱵᱟᱨᱟᱵᱟᱹᱨᱤᱜ ᱟᱨ ᱵᱟᱝ ᱧᱮᱞᱟᱜ ᱫᱟᱹᱭᱠᱟᱹ. ᱵᱟᱹᱜᱤ ᱦᱚᱪᱚ ᱟᱠᱟᱣᱟᱫ-ᱟ, ᱡᱟᱦᱟᱸ ᱨᱮᱭᱟᱜ ᱥᱟᱶᱛᱟ ᱨᱮᱭᱟᱜ ᱱᱟᱜᱟᱢ ᱨᱮ ᱱᱤᱛ ᱫᱷᱟᱹᱵᱤᱡ ᱚᱱᱠᱟᱱ ᱫᱚᱥᱟᱨ ᱫᱟᱹᱭᱠᱟᱹ. ᱵᱟᱝ ᱧᱟᱢᱚᱜ ᱠᱟᱱᱟ ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Sindhi

وير ٻال دوس جي موقعي تي
مان.............. گرو گووند سنگھ جن جي ننڍن صاحب زادن کي نمن ڪيان ٿو. جن
پنهنجي
انوٺي شهادت ذريعي اهڙي انوکي مثال قائم ڪئي جنهنجو سڄي سنسار جي تاريخ ۾
اڄ تائين ڪو

ٻيو جوڙ نٿو ملي
اڄ جي ڏينهن سن 1704ع ۾ ست ۽ نو سال جي ننڍن صاحب زادن بابا زوراور سنگهه ۽
بابا فتح سنگهه ظالم مغل نواب وزير خان جي ظلم جي مخالفت ڪندي سک پنٿ جي
گريما ۽ سمان خاطر پاڻ زندھ ديوار ۾ چنجڻ قبول ڪيو پر سک ڌرم نه ڇڏيو

ڌرم جي آزادي لاءِ پنهنجي شهادت ڏيئي ظالم مغل حڪومت جون پاڙون ڌوڏي ڇڏڻ
وارن صاحب زادن جي مهان شهيدي کي پرڻام ڪندي مانني نريندر مودي جن 26
ڊسمبر کي وير ٻال دوس گهوشت ڪيو آهي

ماتا گجري جن ۽ صاحب زادن جي ان منفرد شهادت کي راشٽر سدائين ياد ڪندو
رهندو

Tamil

வீரக் குழந்தைகள் தினத்தன்று
இன்றுவரை உலக வரலாற்றில் வேறு எந்த உதாரணமும் காணப்படாத வகையில் தங்களது தனித்துவமான தியாகத்தின் வாயிலாக ஒரு தனித்துவமான உதாரணம் ஏற்படுத்திய குரு கோவிந்த் சிங்கின் சிறந்த இளம் சிறார்களுக்கு நான்..... தலைவணங்குகிறேன்.

கி.பி. 1704 ஆம் ஆண்டு இதே நாளில், 7 மற்றும் 9 வயதுடைய பாபா ஜோராவர் சிங் மற்றும் பாபா ஃபதே சிங் ஆகிய இளம் சிறார்கள் முகலாயக் கொடுங்கோலரசன் நவாப் வஜீர்கானின் கொடுங் கோன்மையை எதிர்த்து, சீக்கிய சமூகத்தின் கண்ணியம் மற்றும் மரியாதையைக் காக்க தங்களைச் சுற்றிலும் எழுப்பப்பட்ட சுவருக்குள் உயிருடன் சமாதியானார்கள். ஆனால், சீக்கியமதத்தை கைவிடவில்லை.

மத சுதந்திரத்திற்காக தங்கள் உயிரையே தியாகம் செய்து, கொடுங்கோல் முகலாயப் பேரரசின் வேர்களை உலுக்கிய சிறந்த இளம் சிறார்களின் மகத்தான தியாகத்திற்கு வணக்கம் செலுத்தி, மாண்புமிகு பிரதமர் மோடி அவர்கள் டிசம்பர் மாதம் 26 ஆம் நாளை வீரக்குழந்தைகள் தினமாக அறிவித்தார்.

அன்னை குஜ்ரி மற்றும் இளம் சிறார்களின் தனித்துவமான தியாகத்தை நாடு எப்போதும் நினைவில் வைத்திருக்கும்.

Telugu

వీర బాలలదినం సందర్భంగా నేను.....గురు గోవిందసింగ్ చిన్నకుమారులకు నమస్కరిస్తున్నాను. వాళ్ళు తమ అపూర్వ బలిదానం ద్వారా ఒక గొప్ప ఉదాహరణను నిరూపించారు.ప్రపంచ చరిత్రలో ఇప్పటివరకు ఇటువంటి సాహసబాలలు కనిపించరు.

ఇవాల్టిరోజునే 1704 వ .సం.లో బాబా జోరావర్ సింగ్, బాబా ఫతేసింగ్ అనే ఏడేళ్ళ, తొమ్మిదేళ్ళ కుమారులు క్రూర మొగలాయి నవాబు వజీర్ ఖాన్ అణచివేతను ధిక్కరించి తమను తాము సజీవసమాధికి అర్పించుకున్నారుగానీ సిక్కుధర్మాన్ని వదులుకోలేదు.

ధర్మ స్వాతంత్ర్యం కోసం ప్రాణాలర్పించి హింసాత్మక మొగలు సామ్రాజ్య పునాదులను పతనంవైపు కదిలించిన ఈ బాలుర మహత్తర బలిదానానికి ప్రణమిల్లుతూ మాన్య ప్రధానమంత్రి శ్రీ నరేంద్రమోడిగారు డిసెంబరు 26 వ తేదీని వీరబాలలదినంగా ప్రకటించారు.

గుజరీమాత,ఇద్దరు వీర కుమారుల అపూర్వ బలిదానాన్ని దేశం సదా స్మరిస్తూనే ఉంటుంది.

Punjabi

ਵੀਰ ਬਾਲ ਦਿਵਸ ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਮੈਂ.....ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਛੋਟੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਲਾਸਾਨੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਨਾਲ ਅਜਿਹੀ ਅਦੁੱਤੀ ਮਿਸਾਲ ਕਾਇਮ ਕੀਤੀ, ਜਿਸ ਦੀ ਅੱਜ ਤੱਕ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਦੂਜੀ ਉਦਾਹਰਣ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

ਅੱਜ ਦੇ ਦਿਨ 1704 ਈ: ਨੂੰ 7 ਅਤੇ 9 ਸਾਲ ਦੇ ਛੋਟੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦੇ ਬਾਬਾ ਜ਼ੋਰਾਵਰ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਬਾਬਾ ਫਤਿਹ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਜ਼ਾਲਮ ਮੁਗਲ ਨਵਾਬ ਵਜ਼ੀਰ ਖ਼ਾਨ ਦੇ ਜ਼ੁਲਮ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸਿੱਖ ਪੰਥ ਦੀ ਬੁਲੰਦੀ ਅਤੇ ਸ਼ਾਨ ਲਈ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਜਿੰਦਾ ਨੀਂਹਾਂ ਵਿੱਚ ਚਿਣਵਾ ਲਿਆ ਪਰ ਸਿੱਖੀ ਨਹੀਂ ਛੱਡੀ।

ਧਰਮ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਆਪਣੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦੇ ਕੇ ਜ਼ਾਲਮ ਮੁਗਲ ਰਾਜ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਹਿਲਾ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ ਦੀ ਮਹਾਨ ਸ਼ਹਾਦਤ ਨੂੰ ਨਮਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ, ਮਾਣਯੋਗ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਨਰੇਂਦਰ ਮੋਦੀ ਜੀ ਨੇ 26 ਦਸੰਬਰ ਨੂੰ ਵੀਰ ਬਾਲ ਦਿਵਸ ਵਜੋਂ ਘੋਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਮਾਤਾ ਗੁਜਰੀ ਜੀ ਅਤੇ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ ਦੀ ਲਾਸਾਨੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਨੂੰ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸਦਾ ਚੇਤੇ ਕਰਦਾ ਰਹੇਗਾ।